International Journal of Advanced Education and Research
www.alleducationjournal.com
ISSN: 2455-5746
Received: 20-07-2021, Accepted: 05-08-2021, Published: 20-08-2021
Volume 6, Issue 4, 2021, Page No. 75-77

रीवा जिले के शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं अभिभावकों की जागरूकता का अध्ययन करना।

Ritu Singh Parihar
Guest Faculty, Department of B.Ed, APS University, Rewa, Madhya Pradesh, India

सारांश
रीवा जिले के शासकीय प्रारंभिक स्तर के शिक्षकों में अपने कर्तव्य के प्रति सर्मपर्ण एवं अभिभावकों की जागरूकता का अध्ययन करने के लिये शिक्षकों हेतु कर्तव्य के प्रति सर्मपर्ण एवं अभिभावकों की जागरूकता का अध्ययन करने के लिये रीवा जिले के प्रत्येक विकासखण्ड के शासकीय तथा निजी विद्यालयों से 06–06 शिक्षकों का चयन एवं 50 अभिभावको का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। शोध के उद्देश्य अभिभावको की जागरूकता का अध्ययन करना एवं शिक्षकों में विद्यालय के प्रति अनेक कर्तव्यों एवं सर्मपण भाव का अध्ययन करना एवं निष्कषतः यह पाया गया कि शासकीय प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों में अपने कर्तव्य के प्रति सर्मपण का अभाव है तथा अभिभावकों में भी जागरूकता का अभाव पाया गया है।

मूल शब्दः रीवा जिले शासकीय विद्यालयों, शिक्षकों, अभिभावकों, जागरूकता

प्रस्तावना
आज का मानव शिक्षा को आर्थिक दृष्टि से देख रहा है, क्योंकि आज की शिक्षा आर्थिक विकास की अगुवाई कर रही है। इस दृष्टि से ''इतिहास में प्रथमवार शिक्षा, मनुष्य को उस समाज के लिए तैयार कर रही है, जिसका निर्माण अभी तक नही हुआ।'' शिक्षा के लिए यह चुनौती पूर्णतः नवीन है, क्योंकि शिक्षा का अब तक का कार्य समकालीन समाज को उसी रूप में जीवित रखना और उसके सामाजिक सम्बन्धों को बनाये रखना था। परन्तु आज उसका लक्ष्य अपरिचित बच्चों को अपरिचित दुनिया के लिए शिक्षित करना है।

एडम्स के अनुसार–''शिक्षा द्विमुखी प्रक्रिया है।'' इसमें पहला शिक्षक और दूसरा छात्र। दोनो क्रिया प्रतिक्रिया करते है एडम्स के अनुसार शिक्षा की प्रक्रिया को पूरी होने में दो व्यक्ति या दो पक्षों की आवश्यकता होती है। प्रक्रिया के बाद परिणाम आता है, जो शिक्षा के रूप में होता है। जॉन ड्यूबी इस बात का खण्डन करते हैं और कहते है कि ''शिक्षा त्रिमुखी प्रक्रिया है। ''ड्यूबी के अनुसार शिक्षक, विद्यार्थी एवं सामाजिक शक्तियाँ, ये तीन मिलकर शिक्षा की प्रक्रिया को पूरा करते हैं। ड्यूबी के अनुसार जिस सामग्री को शिक्षक विद्यार्थी के समक्ष प्रस्तुत करता है वह सामग्री सामाजिक शक्तियों से अथवा समाज से प्राप्त होती है। बच्चों के समक्ष शिक्षक द्वारा क्या प्रस्तुत करना है, यह समाज निर्धारित करता है। वर्षो पहले और आज शिक्षा के मामले में सब कुछ बदल गया है। शिक्षा की परिभाषा बदल गई है, शिक्षा का अर्थ बदल गया है, शिक्षा का उद्देश्य बदल गया है, शिक्षा की अवधारणा बदल गई है। शिक्षा को व्यापक एवं संकुचित दोनो ही अर्थो में स्पष्ट करना उचित होगा।

उद्देष्यः शासकीय प्रारंभिक स्तर के एवं अशासकीय प्रारंभिक स्तर के शिक्षकों में विद्यालय के प्रति अनेक कर्तव्यों एवं समपर्ण भाव का अध्ययन करना एवं अभिभावको की जागरूकता का अध्ययन करना

परिकल्पनाएँ
1. शासकीय प्रारंभिक स्तर के शिक्षकों में अपने कर्तव्य के प्रति समपर्ण का अभाव है।
2. शासकीय प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों में विद्यार्थियों की घटती हुई संख्या का कारण अभिभावकों में जागरूकता का अभाव है।

न्यादर्षः शासकीय विद्यालय के 54–54 शिक्षक एवं कुल 50 अभिभावको का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया।

सारणी 1: कर्तव्य के प्रति षिक्षको के समर्पण संबंधी साक्षात्कार अनुसूची का मूल्यांकन (षासकीय षिक्षको के)

परिकल्पना	परिकल्पना के पक्ष में मत	परिकल्पना के विपक्ष में	अनिष्चित	कुल मत
शासकीय प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षको में अपने कर्तव्य के प्रति समपर्ण का अभाव है।	516	264	246	1026

इस प्रकार 19 प्रश्नों पर कुल 1026 मत प्राप्त होते है जिसमे से परिकल्पना क्रमांक–4 ''शासकीय प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षको में अपने कर्तव्य के प्रति समपर्ण का अभाव है।'' के पक्ष में कुल 516 मत प्राप्त हुए है जबकि विपक्ष में 264 तथा अनिश्चितता के पक्ष में 246 मत है। अंतर की सार्थकता हेतु शोधार्थी द्वारा काई–वर्ग परीक्षण का उपयोग किया गया है।

सारणी 2: कर्तव्य के प्रति षिक्षको के समपर्ण का साख्यिकीय विष्लेषण

मत (परिकल्पना)	पक्ष में	विपक्ष में	अनिश्चित	योग	स्वतंत्रता की कोटि (C-1)+ (R-1)
निरीक्षित आवृत्ति (fo)	516	264	246	1026	(2-1)+(3-1)=3
प्रत्याशित आवृत्ति (fe)	342	342	342	1026	

fo-fe	174	-78	-96		
$(fo-fe)^2$	30276	6084	9216		
$\frac{(fo-fe)^2}{fe} x^2$	88.53	17.79	26.95		
	133.27				

व्याख्याः कर्तव्य के प्रति शिक्षको में समपर्ण का सांख्यिकीय विश्लेषण शोधार्थी द्वारा किया गया है। शोधार्थी की यह परिकल्पना है कि ''शासकीय प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षको में अपने कर्तव्य के प्रति समपर्ण का अभाव है।'' शोधार्थी द्वारा इस संबंध में अध्ययन हेतु कुल 54 शासकीय शिक्षको पर संबंधित में अध्ययन हेतु कुल 54 शासकीय शिक्षको पर संबंधित उपकरण के प्रशासित किया गया। उपकरण में कुल 19 प्रश्न के प्रत्येक प्रश्न पर कुल 1026 प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुई है जिनमे से 516 प्रतिक्रियाएँ परिकल्पना के पक्ष तथा 264 प्रतिक्रियाए परिकल्पना के विपक्ष में प्राप्त हुई है। 246 प्रतिक्रियाएँ न तो पक्ष में है और न ही विपक्ष में अर्थात अनिश्चित हैं। सांख्यिकीय विश्लेषण शोधार्थी द्वारा काई–वर्ग परीक्षण के माध्यम से किया गया है। विश्लेषण में x^2 मान 133.27 प्राप्त हुआ है जो काई–वर्ग तालिका से स्वतंत्रता की कोटि 3 के 0.05 स्तर पर काई वर्ग का मान 7.81 तथा 0.01 स्तर पर काई वर्ग का मान 11.34 है जो गणना से प्राप्त काई वर्ग के मान 133.27 से कम है। अतः शोधार्थी की परिकल्पना ''शासकीय प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों में अपने कर्तव्य के प्रति समपर्ण का अभाव है। स्वीकृति होती है।

व्याख्या (अभिभावक साक्षात्कार अनुसूची)

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत उपकरण को स्वनिर्मित किया गया है। अनुसूची में 01 से लेकर 17 सरल क्रमांक तक समाहित है। अनुसूची के सभी प्रश्नों के उत्तर हॉ/नही प्रकार के हैं। इस उपकरण का सम्बन्ध शोधार्थी की परिकल्पना क्रमांक–3 से है। परिकल्पना क्रमांक–3 यह है कि ''शासकीय प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों में विद्यार्थियों की घटती हुई संख्या का कारण अभिभावकों में जागरूकता का अभाव है।'' अभिभावकों की जागरूकता संबंधी अध्ययन करने हेतु शोधार्थी द्वारा प्रत्येक विकासखण्ड से 10–10 अभिभावकों का चयन यादृच्छिक रूप से किया गया है। इस प्रकार कुल 90 अभिभावको पर इस उपकरण को प्रशासित किया गया है। शोधार्थी द्वारा स्वंय साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से अभिभावको की राय प्राप्त की गई है। कुल 16 प्रश्नो पर (प्रश्न क्रमांक 09 को छोडकर) परिकल्पना के पक्ष अथवा विपक्ष में मत प्राप्त होते है।

प्रश्न क्रमांक–7 एवं 17 इस प्रकृति के है कि इनके उत्तर ''हॉ'' में आने पर जवाब परिकल्पना के पक्ष में दो तथा शेष 15 प्रश्न ऐसे है जिनके उत्तर ''नहीं'' में आने पर जवाब परिकल्पना के पक्ष में माना गया है।

एक अनुसूची एक व्यक्ति पर प्रशासित करने पर कुल 17 प्रश्नों पर पक्ष अथवा विपक्ष में मत प्राप्त होते है। इस प्रकार एक अभिभावक पर अनुसूची प्रशासित करने पर कुल 17 मत प्राप्त हुए है जिसमे से कुछ पक्ष तथा कुछ विपक्ष में है। इस प्रकार कुल 90 अभिभावकों से परिकल्पना के पक्ष तथा विपक्ष मे कुल 1530 मत प्राप्त हुए है। परिकल्पना के पक्ष तथा विपक्ष में मतो का विवरण निम्नानुसार सारणी में प्रदर्शित है।

सारणी 3: अभिभावकों के जागरूकता संबंधी अध्ययन

परिकल्पनाः शासकीय प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों में विद्यार्थियो की घटती हुई संख्या का कारण अभिभावको में जागरूकता का अभाव है।		
पक्ष में मतो की संख्या	**विपक्ष में मतो की संख्या**	**कुल मत**
1039	491	1530

सारणी 4: अभिभावकों के जागरूकता संबंधी मतो का सार्थकता परीक्षण

मत	**पक्ष में**	**विपक्ष में**	**योग**	**स्वतंत्रता की कोटि** (c-1) + (R-1)
निरीक्षत आकृति (fo)	1039	491	1530	2
प्रत्याशित आवृत्ति (fe)	765	765	1530	
fo-fe	274	–274		
$(fo-fe)^2$	75076	75076		
$\frac{(fo-fe)^2 = f^2}{fe}$	98.14	98.14		
ϵX^2	196.28			

व्याख्याः स्वतंत्रता की कोटि 2 पर x^2 (कोई वर्ग) का सार्थकता मान सारणी में 0.05 विश्वास स्तर पर 5.99 तथा 0.01 विश्वास स्तर पर 9.21 है, जबकि अभिभावको के जागरूकता संबंधी मतो के विभाजन संबंधी गणना से प्राप्त काई–वर्ग का मान 196.28 प्राप्त होगा जो उक्त दोनो स्तर के मानों से बहुत अधिक है, इससे स्पष्ट होता है कि मतों के आधार पर सांख्यिकीय परीक्षण से दोनो पक्षो में सार्थक अंतर है। अर्थात शून्य परिकल्पना का कोई अस्तित्व नही है। सार्थक अंतर क्या है इस संबंध में स्पष्ट है कि जिस पक्ष में मत अधिक है, उसका वर्चस्व है। प्रस्तुत गणना में शोधार्थी की परिकल्पना ''शासकीय प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों में विद्यार्थियों की घटती हुई संख्या का कारण अभिभावकों में जागरूकता का अभाव है।'' के पक्ष में अधिक मत है। अतः शोधार्थी की परिकल्पना स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

ज्यादातर शिक्षक कक्षा में समय से उपस्थित तो होते है लेकिन पूरे मनोयोग से अध्ययन कार्य नही करते है। प्रार्थना सभा में बच्चों को सम्बोधित करने में अधिकतर शिक्षकों के हिचकिचाहट होती है। अधिकतर शिक्षक अध्यापन कार्य करने पहले पाठ की तैयारी अर्थात पाठयोजना नही बनाते है। अधिकतर शिक्षक बच्चों का सही मूल्यांकन नही करते है। ज्यादातर अभिभावक अपने बच्चे की प्रगति जानने तथा PTA की बैठक में शामिल नही होते

है। ज्यादातर अभिभावक अपने बच्चो की वर्क बुक या अभ्यास पुस्तिकाएँ नही देखा करते है। अधिकतर अभिभावक स्वयं अपने बच्चों को घर पर नही पढाते है। अधिकतर अभिभावक शिक्षको से अपने बच्चों की प्रगति के संबंध में न तो फोन पर जानकारी प्राप्त करते है, और न ही विद्यालय जाकर।

सुझावः शासकीय शिक्षकों को नियमित विषयवस्तु का अध्ययन करना चाहिए। शासकीय शिक्षकों को कक्षा में जाने के पूर्व पाठ योजना तैयार करना चाहिए। प्रारंभिक स्तर के शासकीय शिक्षकों को शैक्षिक पेडागॉजी का नियमित अध्ययन करना चाहिए। प्रारंभिक स्तर के शासकीय शिक्षकों को शिक्षण कौशल, शिक्षण तकनीकी, शिक्षण विधियो तथा शिक्षण के नये–नये उपागम से जुड़े रहना चाहिए और अपने कक्षा में उनका उपयोग करना चाहिए। अभिभावको को यह सुझाव है कि वे शिक्षक–पालक संघ की बैठक में अवश्य उपस्थित है। अभिभावको को यह भी सुझाव है कि वे बच्चों की कॉपी और पेन की व्यवस्था करे और यह पता करे कि उन्हें निःशुल्क पाठ्यपुस्तके प्रदान की गई है अथवा नही।

संदर्भ

1. www.mpeducaitonportal.gov.in
2. पी. डी. शर्मा भारत में शिक्षा स्तर मुद्दे एवं समस्याएँ
3. अदावल एम.सी. एजुकेशन रिसर्च इन इन्डिया
4. कपिल एच.के. अनुसंधान विधियाँ
5. राय पारस नाथ अनुसंधान परिचय